International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 277-280

श्रीमदभगवदगीता में वर्णित ज्ञानयोग का शैक्षिक विश्लेषण

दिनेश कुमार लाटा*
डॉ. सुश्री मनोजलता सिंह**

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन को परम्परा के आधार पर आस्तिक एवं नास्तिक दो भागों में बॉटा जाता है। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत वे दर्शन आते है जो वेदों में विश्वास करते है तथा नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत वेदों में विश्वास न करने वाले दर्शन आते है। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व एवं उत्तर मीमांसा ये षडदर्शन आते है। गीता आस्तिक दर्शनों की कोटि में आता है। श्रीमदभगवदगीता में सन्निहित शिक्षा के उद्देश्य की आवश्यकता महसूस की जा रही है, उसके सर्वथा अनुकूल है। वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य बालक की व्यावसायिक कुशलता के विकास को आधार बनाकर उसका सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास करना है। श्रीमदभगवदगीता में सन्निहित शिक्षा आत्मबोध की भावना का विकास करने की आवश्यकता बताती है। वर्तमान समय मे आदर्श, सदगुणी एवं मूल्यों से युक्त एक पूर्ण मानव का निर्माण करने की जो आवश्यकता महसूस की जा रही है, उसकी पूर्ति गीता भी करना चाहती है। इस संदर्भ में शिक्षा के साथ मनोविज्ञान का महत्व भी व्यक्ति के चरित्र निर्माण हेतु बढ जाता है।

समस्या का औचित्य

आज का मानव पाश्चात्य की तरफ बढ रहा है। इसी भौतिकवाद के कारण मनुष्य अपने जीवन के मूल्यों को भूल गया है। इस भोगवाद के कारण मनुष्य चारों तरफ से दुःखी और निराश हो रहा है। उसके मन में कुण्ठा, तनाव तथा दुश्चिन्ता बढ रही है। ज्ञानयोग का इस परिपेक्ष्य में महत्व है कि वह व्यक्ति को भोगवाद से दूर ले जाता है तथा उसे सन्तुलित मन बुद्धि व इन्द्रिय वाला बनाता है। ज्ञानयोग मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहता है कि– ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले भोग है, यद्यपि यह सुखकर लगते है, परन्तु यह दुःखकारी है, इनसे सुख प्राप्त नही किया जा सकता क्योंकि ये अनित्य है, बुद्धिमान पुरूष इनसे दूर रहता है।

वर्तमान में मनुष्य सांवेगिक रूप से अस्थिर हो रहा है। वह कामुक तथा क्रोधी हो रहा है। ज्ञानयोग इससे बचने की सलाह देता है और कहता है कि काम–क्रोध शरीर का नाश करने वाले है, अतः मनुष्य को चाहिए कि वह इनसे बचकर रहे। काम–क्रोध से रहित ज्ञान पुरूष परमात्मा का साक्षात्कार करते है।

श्रीमदभगवदगीता एक ऐतिहासिक ग्रन्थ ही नही है, प्रत्युत इसमें द्वन्द, कुण्ठा, संत्रास से ग्रस्त मानव जाति के कल्याण के निमित्त अनेक करणीय और अकरणीय मंतव्य भी विद्यमान है। गीता का आरम्भ ही इस सारगर्भित कथन से है–

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्तोत्तिश्ठ परंतप।।

अर्थात उठ हे पार्थ। नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझमें यह उचित नहीं जान पडती । हे परंतप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्यागकर युद्ध के लिये खडा हो जा।

* शोधछात्र, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चुड़ेला, झुंझंनू, राजस्थान।
** शोध निदेशक, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चूड़ेला, झुंझुनू, राजस्थान।

अध्ययन के उद्देश्य

- श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षा का विश्लेषण करना।
- श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग के अनुसार पाठयक्रम का अध्ययन करना।
- श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
- श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षक–छात्र संकल्पना का अध्ययन करना।
- श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग के अनुसार अनुशासन का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा अपने सम्बन्धित अध्ययन हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि को स्वीकार किया गया है। किसी दार्शनिक समस्या का व्यवस्थित रूप में किया गया अध्ययन ही दार्शनिक शोध कहलाता है।

प्रस्तावित शोध कार्य में श्रीमदभगवद्गीता में वर्णित ज्ञानयोग का शैक्षिक विश्लेषण किया जाता है। इस हेतु विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिये वांछित सूचनाएँ प्राप्त करने के लिये प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत श्रीमदभगवद्गीता के मूल पाठ को आधार बनाकर इसमें निहित ज्ञानयोग एवं गौण स्त्रोत के अन्तर्गत श्रीमदभगवद्गीता पर लिखी गई विभिन्न टीकाओं, पुस्तकों, प्रकाशित लेख, शोधकार्यो एवं विभिन्न व्याख्यानों का अध्ययन स्वीकार किया गया है।

शोध कार्य के निष्कर्ष

- **ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षा का विश्लेषण करना**

अ) ज्ञानयोग में शिक्षा की परिभाषा से ली गई है। इसमें अनुसार ज्ञान के समान अन्य कोई पवित्र नहीं है। यह व्यक्ति के अन्तःकरण को पवित्र कर देता है। ज्ञान की शक्ति से मनुष्य के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते है। ज्ञानयोग ने शिक्षा की उपर्युक्त परिभाषा देते हुए कहा कि ''जो प्रत्येक व्यक्ति में निहित ब्रहम अथवा परमात्मा की अनुभूति करवाने में सहायक हो, वह शिक्षा है। इस अन्तरात्मा के दर्शन वह मनुष्य ही कर सकता है, जिसके ज्ञानचक्षु खुल गये है, मोहान्ध प्राणी नहीं।''

- **ज्ञानयोग के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का होता है**

(अ) अपरा ज्ञान या सांसारिक ज्ञान, (ब) परा ज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान

अपरा ज्ञान निम्न श्रेणी का ज्ञान है। अपरा ज्ञान के अन्तर्गत – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन और बुद्धि का अध्ययन किया जाता है। परा ज्ञान अपरा ज्ञान से श्रेष्ठ है, इसे आध्यात्मिक ज्ञान भी कहा जाता है। इसका स्वरूप चैतन्य है। इसके अन्तर्गत आत्मा और परमात्मा का अध्ययन किया जाता हैं। यह ज्ञान सम्पूर्ण संसार को धारण करता है।

- ज्ञानयोग में ज्ञान तथा बुद्धि का वर्गीकरण गुणों के आधार पर किया गया है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में तीनों गुण पाये जाते है, उनमें से प्रत्येक व्यक्ति में एक सक्रिय होता है उसी के अनुसार उसका ज्ञान तथा बुद्धि होती है। इन तीनों गुणों के बारे में कहा गया है कि पृथ्वी या स्वर्ग में अथवा देवताओं में से ऐसा प्राणी नहीं है जो इन तीनों गुणों से रहित है। ये तीन गुण है –सत्व, रज और तम्। इसी के आधार पर ज्ञान तथा बुद्धि का वर्गीकरण क्रमशः इस प्रकार किया है – सात्विक ज्ञान, राजस ज्ञान और तामसिक ज्ञान तथा सात्विक बुद्धि, राजसिक बुद्धि और तामसिक बुद्धि। इनमें सात्विक ज्ञान और सात्विक बुद्धि श्रेष्ठ है। इससे परमात्मा की अनुभूति हो सकती है।

ज्ञानयोग के अन्तर्गत शिक्षा उद्देश्य के आधार पर निष्कर्ष

- स्वकर्तव्य की भावना तथा दूसरों के कर्तव्यों में हस्तक्षेप न करने की भावना का विकास करना ज्ञानयोग में शिक्षा का उद्देश्य है।
- अनासक्त कर्म करने की क्षमता का विकास शिक्षा का उद्देश्य है। ज्ञान से व्यक्ति कर्मों में भेद करता है। इस शक्ति से ही व्यक्ति निश्काम कर्म कर सकता है।

- ज्ञानयोग का उद्देश्य है कि अपने अधिकार के स्थान पर व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करें। यदि वह अपने कर्तव्य का पालन करे तो अधिकार तो उसे अपने आप ही प्राप्त हो जायेंगे।
- ज्ञानयोग व्यक्ति के लिये शिक्षा की व्यवस्था करता है जो समत्व बुद्धि का विकास करें। इस बुद्धि से व्यक्ति पाप–पुण्य दोनों में लिप्त नहीं रहता।
- ज्ञानयोग का उद्देश्य ऐसा कुशल नागरिक तैयार करना हैं, जो अपने कर्तव्य की ओर उन्मुख रहे, स्वाभाविक गुण के अनुसार निश्ठापुर्वक अपना कार्य करें।
- ज्ञानयोग के अनुसार प्राप्ति करने का उद्देश्य व्यक्ति में कामनाओं की समाप्ति करना, इन्द्रियों पर नियंत्रण करना व आत्मानुभूति करवाना है जिससे वह परमात्मत्व का दर्शन कर सके।
- ज्ञान व्यक्ति के काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, माया आदि को दूर करके इन्द्रिय निग्रह द्वारा मोक्ष प्राप्त कराता है, जिससे वह नैतिक–अनैतिक, कर्म–अकर्म तथा अच्छा–बुरा का विचार कर सके। इसके साथ ही ज्ञान का उद्देश्य अज्ञान का नाश करना है।

ज्ञानयोग के अनुसार पाठ्यक्रम के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

- गीता में पाठयक्रम को दो भागों में बांटा गया है –

(अ) परा विद्या पाठयक्रम (ब) अपरा विद्या पाठयक्रम।

अपरा विद्या पाठयक्रम के अन्तर्गत भौतिक, रसायन, यांत्रिकी, शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान, जीव विज्ञान, अर्थशास्त्र, खेल, व्यायाम, समाज विज्ञान के विषय एवं कला, साहित्य, संगीत का अध्ययन किया जाता हैं। परा विद्या पाठयक्रम के अन्तर्गत अध्यात्म विज्ञान, इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि को वश में संबंधी क्रियाएँ, योगाभ्यास, ध्यान–धारणा, समाधि, प्राणायम आदि का अध्ययन किया जाता है।

- ज्ञानयोग में पाठयक्रम को व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार बांटा गया है –

सात्विक पाठयक्रम, राजसिक पाठयक्रम तथा तामसिक पाठयक्रम। सात्विक पाठयक्रम अध्यात्म से संबंधित है, इसके अन्तर्गत इन्द्रिय निग्रह, अन्तःकरण की शुद्धता, बाहय अन्तर संबंधी शुद्धता का अध्ययन किया जाता है। राजसी पाठयक्रम में युद्धकला, प्रशासन, शूरवीरता, धैर्य आदि का अध्ययन किया जाता है। तामसी पाठ्यक्रम में खेती, गौ–पालन, व्यापार आदि क्रियाओं का अध्ययन किया जाता हैं।

- ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षण विधियों के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

ज्ञानयोग में शिक्षण विधियों में प्रश्न–प्रतिप्रश्न विधि, विचार–विमर्श विधि, श्रवण विधि, स्वाध्याय विधि को शामिल किया।

गुणों के आधार पर अलग अलग शिक्षण विधियों का वर्णन किया गया है – सात्विक ज्ञान की विधि, राजसिक ज्ञान की विधि तथा तामसिक ज्ञान की विधि।

ज्ञानयोग के अनुसार शिक्षक–छात्र संकल्पना के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

- ज्ञानयोग के अनुसार छात्र शरीर, मन बुद्धि एवं आत्मा का संयोग है। छात्र चार प्रकार के होते है– आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी एवं ज्ञानी। त्रिगुण बंधन के बालक तीन प्रकृति के होते है, सात्विक, राजसिक तथा तामसिक।
- ज्ञानयोग ने शिष्य की कुछ योग्यताएँ अपेक्षित मानी हैं। छात्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिये संयम तथा तप होना चाहिए। छात्र का अपने शिक्षक के प्रति समर्पण भाव होना चाहिए। छात्र अध्यापक के प्रति सामर्थ्यपूर्ण विश्वास रखें।
- ज्ञानयोग में शिक्षक संकल्पना स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान उच्च एवं महत्वपूर्ण है। शिक्षक परबह्म का अवतार है।

- शिक्षक में ज्ञान प्राप्त व्यक्ति के सभी लक्षण होना अनिवार्य है। वह शिष्य को चिंतामुक्त कर आशा का संचार करे। शिक्षक कार्य शिष्य को चिंतामुक्त करना, आशा का संचार करना तथा उसका उत्साहवर्धन करना हैं।
- गुरू–शिष्य संबंध मित्रवत होने चाहिए। श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों मित्र थे। शिक्षक बालक की योग्यताओं को पहचानकर उसके अनुसार शिक्षा दे। शिष्य के हृदय में गुरू के प्रति श्रद्धा हो तथा गुरू के हृदय में शिष्यवत्सलता हो।

ज्ञानयोग के अनुसार अनुशासन के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

- ज्ञानयोग के छात्र संयमित आहार तथा संयमित निद्रा लेने वाला होना चाहिए। छात्र अपनी दिनचर्या को नियमित रखें।
- गीता में गुणों का महत्वपूर्ण स्थान है। गुण अनुशासन को प्रभावित करते है। सात्विक गुण वाले छात्र में अनुशासन श्रेष्ठ होता हैं। राजसिक गुण वाले छात्र चंचल तथा तामसिक गुण वाले छात्र आलसी होते है।
- छात्र को अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करना चाहिए, उससे ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
- श्रद्धावान छात्र ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। श्रद्धारहित बालक को ज्ञान संभव नहीं हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

श्रीमदभगवदगीता में श्रीकृष्ण एक शिक्षक के रूप में अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व हैं तथा अर्जुन एक सुपात्र विद्यार्थी के रू‍ में अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है। श्रीकृष्ण में एक महान शैक्षिक प्रशासक एवं शिक्षण व्यूह रचनाविद् के समस्त गुण विद्यमान है। वर्तमान समय में शिक्षकों के लिये श्रीकृष्ण एक महान आदर्श है। श्रीकृष्ण ने एक गुरू (शिक्षक) की समस्त मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने शिष्य अर्जुन को उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। इसी प्रकार वर्तमान समय में शिक्षक अपनी धार्मिक एवं सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने शिक्षक धर्म का निर्वहन कर सकता हैं।

गीता का ज्ञान न केवल शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये वरन् शिक्षा मंत्रियों, शिक्षाविदों एवं व्यवस्थापकों के लिये भी लाभदायक है। भगवद्गीता में शिक्षण कौशल, शिक्षण विधियों, शैक्षिक उद्देश्यों को लेकर मूल्यांकन तक के समस्त शैक्षिक तत्व निहित हैं। इस प्रकार श्रीमदभगवद्गीता शिक्षा संबंधी तथ्यों से परिपूर्ण है जिसका अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में अपरिहार्य हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ साहित्य

1. आत्रेय, डॉ, शांति प्रकाश : योग मनोविज्ञान, दी इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन, वाराणसी
2. आचार्य रजनीश : गीता दर्शन, डायमण्ड बुक डिपो, दिल्ली 1980
3. आत्मानंद स्वामी : गीतातत्व चिंतन, भीलवाडा संस्कृति प्रकाशन, कलकत्ता 1984
4. आर्य मुनि जी : महाभारत आर्य टीका–प्रथम व द्वितीय भाग, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरूकुल, झज्जर, 1995
5. ओड़, डॉ, एल के : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008
6. भक्तिवेदान्त, ए.सी, स्वामी प्रभुपाद : श्रीमदभगवदगीता भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट मुम्बई 1990
7. भावे विनोबा : गीता प्रवचन सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1995
8. भटनागर सुरेश : शिक्षा मनोविज्ञान लायल बुक डिपो मेरठ 2008
9. चतुर्वेदी खेमचन्द : शाश्वत जीवन की व्याख्या गीता तुलसी मानस संस्थान जयपुर, 2006
10. दवे हरीन्द्र : ओशो गीता दर्शन भाग–1 विशाद का बंसत रेबल पब्लिशिंग हाउस गोरेगांव पुणे 1996
11. पाठक पी.डी : शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005

❖◆❖